भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून की प्रगति

स्रोत: द हिंदू

दक्षिण-पश्चिम मानसून केरल में प्रवेश कर चुका है और **पूर्वोत्तर भारत के अधिकाँश भागों में** आगे बढ़ रहा है, जो उपमहाद्वीप में वर्षा ऋतु के आगमन का संकेत है।

- दक्षिण-पश्चिम मॉनसून दक्षिण-पश्चिम अरब सागर के शेष भागों, पश्चिम मध्य **अरब सागर** के कुछ भागों, दक्षिण-पूर्व अरब सागर और **लक्षद्वीप** क्षेत्र के अधिकांश भागों में भी आगे बढ़ गया है।
- चक्रवाती परिसंचरण के कारण पूर्वोत्तर भारत तथा दक्षिणी प्रायद्वीप के कुछ भागों में **हल्की से मध्यम वर्षा और कुछ स्थानों पर भारी से बहुत भारी वर्षा होने की संभावना** व्यक्त की गई है।
- उत्तर-पश्चिम, मध्य और पूर्वी भारत के कुछ हिस्सों में **ग्रीष्म लहर/हीट वेव** की गंभीर स्थिति बनी हुई है तथा आने वाले दिनों में इस स्थिति में कुछ सुधार होने की संभावना है।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून एक मौसमी वायु पैटर्न पर आधारित है जो भारत में **जून माह के आसपास आता है और सितंबर तक रहता है**, इसके परिणामस्वरूप भारत के अधिकांश भागों में वर्षा होती है।
  - दक्षिण-पश्चिम मानसून **भारतीय कृषि** के लिये महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि **वार्षिक वर्षा का लगभग 70%** इसी से प्राप्त होता है।
- **भूमि और जल के बीच तापमान का अंतर** भारत पर निम्न दाब और आसपास के समुद्रों पर उच्च दाब की स्थिति निर्मित करता है, जो **दक्षिण-पश्चिम मानसून** के निर्माण को प्रभावित करता है।
  - इसके अलावा, मानसून निर्माण को प्रभावित करने वाले अन्य कारक हैं- अंतर उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र, अफ्रीकी पूर्वी जेट (AEJ), हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) और अल-नीनो दक्षिणी दोलन (ENSO)।

और पढ़ें: दक्षिण-पश्चिम मानसून

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/advancement-of-the-southwest-monsoon-in-india